

प्रेषक,

एम0एच0 खान

सचिव,

उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,

प्रमुख वन संरक्षक (वन्य जीव)/

मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक,

उत्तराखण्ड, शिविर कार्यालय-देहरादून।

वन एवं पर्यावरण अनुभाग-2

देहरादून: दिनांक 23 दिसम्बर, 2010

विषय:-कार्बेट टाइगर कन्जर्वेशन फाउण्डेशन, उत्तराखण्ड का गठन।

महोदय,

कृपया उपरोक्त विषयक आप अवगत है कि राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा उत्तराखण्ड राज्य में स्थित कार्बेट नेशनल पार्क के कोर क्षेत्र 821.99 वर्ग कि0मी0 एवं बफर क्षेत्र 466.32 वर्ग कि0मी0 अर्थात् कुल क्षेत्रफल 1288.31 वर्ग कि0मी0 को टाइगर रिजर्व घोषित किये जाने की संस्तुति एवं वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (केन्द्रीय अधिनियम सं0-53 वर्ष 1972) (समय-समय पर यथासंशोधित) की धारा-38 V(1) में वर्णित प्रावधानों के अनुसार कथित 1288.31 वर्ग कि0मी0 क्षेत्र को शासन के अधिसूचना सं0-व0जी0-05/X-2-2010-19(34)/2006 दिनांकित 26 फरवरी, 2010 के द्वारा "कार्बेट टाइगर रिजर्व" घोषित किया गया है। उक्त के अतिरिक्त वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (केन्द्रीय अधिनियम सं0-53 वर्ष 1972) (समय-समय पर यथासंशोधित) की धारा-38 X(1) में यह प्रावधान है कि राज्य सरकार अपने राज्य के नियंत्रणाधीन "टाइगर रिजर्व" हेतु "टाइगर कन्जर्वेशन फाउण्डेशन" की स्थापना करेगा, जिसके क्रम में भारत सरकार द्वारा अधिसूचना दिनांक 22 जून, 2007 के माध्यम से बाघ संरक्षण फाउण्डेशन के विनियम के उद्देश्य से दिशा-निर्देश निर्गत किया गया है।

2- अतः उपरोक्त वर्णित व्यवस्था का सम्यक परिक्षणोपरान्त मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (केन्द्रीय अधिनियम सं0-53 वर्ष 1972) (समय-समय पर यथासंशोधित) की धारा-38 X(1) में उल्लिखित प्रावधान तथा बाघ संरक्षण फाउण्डेशन के विनियम के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा बनाई गई दिशा-निर्देश सम्बन्धी अधिसूचना दिनांक 22 जून, 2007 के क्रम में कार्बेट टाइगर कन्जर्वेशन फाउण्डेशन, उत्तराखण्ड का गठन किये जाने की राज्यपाल महोदय सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं।

3- उक्तानुसार गठित कार्बेट टाइगर कन्जर्वेशन फाउण्डेशन, उत्तराखण्ड का न्यास विलेख सम्बन्धी आलेख्य की हिन्दी एवं अंग्रेजी प्रति संलग्न करते हुए मुझे यह भी कहने का निदेश हुआ है कि कार्बेट टाइगर कन्जर्वेशन फाउण्डेशन, उत्तराखण्ड के पंजीकरण हेतु नियमानुसार यथावश्यक अग्रेतर कार्यवाही सुनिश्चित करें।

संलग्नक-यथोपरि।

भवदीय,

(एम0एच0 खान)

सचिव

संख्या- ५४० (1)/X-2-2010, तददिनांकित।

प्रतिलिपि: निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

1. महालेखाकार(लेखा एवं हकदारी), उत्तराखण्ड, ओबराय मोटर्स बिल्डिंग, सहारनपुर रोड, माजरा, देहरादून।
2. महालेखाकार(लेखा परीक्षा), उत्तराखण्ड, वैभव पैलस, सी-1/105, इन्दिरानगर, देहरादून।
3. मा0 विधान सभा के सदस्य जो राज्य विधान सभा में सम्बन्धित क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हों द्वारा प्रमुख वन संरक्षक (वन्य जीव)/मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक, उत्तराखण्ड शिविर कार्यालय, देहरादून।
4. जिला पंचायत के प्रतिनिधि, जो कि कार्बेट टाइगर रिजर्व का प्रतिनिधित्व कर रहे हों द्वारा प्रमुख वन संरक्षक (वन्य जीव)/मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक, उत्तराखण्ड शिविर कार्यालय, देहरादून।
5. प्रमुख सचिव/सचिव, वित्त, उत्तराखण्ड शासन।
6. प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड, देहरादून।
7. निदेशक, कार्बेट टाइगर रिजर्व, उत्तराखण्ड, रामनगर(नैनीताल)।
8. निदेशक, कोषागार एवं वित्त सेवायें, उत्तराखण्ड देहरादून।
9. आयुक्त, कुमाऊं मण्डल, नैनीताल/गढ़वाल मण्डल, पौड़ी, उत्तराखण्ड।
10. समस्त जिलाधिकारी, उत्तराखण्ड।
11. उप निदेशक, कार्बेट टाइगर रिजर्व, उत्तराखण्ड, रामनगर(नैनीताल)।
12. प्रभागीय वनाधिकारी, कालागढ़ टाइगर रिजर्व वन प्रभाग।
13. उप प्रभागीय वनाधिकारी (बिजराजी)/पार्क वार्डन, उत्तराखण्ड रामनगर, नैनीताल।
14. निजी सचिव-मा0 मुख्यमंत्री उत्तराखण्ड शासन।
15. निजी सचिव-मा0 वन एवं वन्य जन्तु, पर्यावरण मंत्री, उत्तराखण्ड शासन।
16. निजी सचिव-मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन।
17. प्रभारी अधिकारी, एन0आई0सी0, उत्तराखण्ड शासन।
18. प्रभारी, मीडिया सेन्टर, उत्तराखण्ड सचिवालय, देहरादून।
19. गार्ड फाईल।

आज्ञा से,  
(सुशांत पटनायक)  
अपर सचिव



## परिशिष्ट

### न्यास विलेख

न्यास की यह घोषण आज दिनांक                      माह                      वर्ष, 2010 को निम्नलिखित आवेदकों के मध्य (जिन्हें यहां आगे "न्यासी" कहा गया है और इसके अन्तर्गत उनके उत्तरवर्ती और उनके प्रशासक तथा निष्पादक भी हैं अथवा तत्समय के लिए निम्नलिखित न्यासी निम्नवत रूप में न्यास सृजित करते हैं।) :-

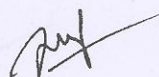
1. वन एवं वन्य जन्तु, पर्यावरण मंत्री, उत्तराखण्ड सरकार।
2. प्रमुख सचिव/सचिव वन एवं वन्य जन्तु, पर्यावरण, उत्तराखण्ड शासन।
3. प्रमुख सचिव/सचिव, वित्त, उत्तराखण्ड शासन।
4. प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड।
5. प्रमुख वन संरक्षक (वन्य जीव)/मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक, उत्तराखण्ड।
6. निदेशक, कार्बेट टाइगर रिजर्व, उत्तराखण्ड रामनगर(नैनीताल)।
7. उप निदेशक, कार्बेट टाइगर रिजर्व, उत्तराखण्ड रामनगर(नैनीताल)।
8. प्रभागीय वनाधिकारी, कालागढ़ टाइगर रिजर्व वन प्रभाग।
9. उप प्रभागीय वनाधिकारी (बिजरानी)/पार्क वार्डन, उत्तराखण्ड रामनगर(नैनीताल)।

जबकि समस्त न्यासी यह आवश्यक समझते हैं कि कार्बेट टाइगर रिजर्व के प्रबन्धन की चिरन्तरता हेतु एक रणनीति आरम्भ करना आवश्यक है। अतः सभी न्यासियों द्वारा अपने मध्य रु० 1000/- की धनराशि एकत्र कर कार्बेट टाइगर कन्जरवेशन फाउण्डेशन, उत्तराखण्ड नामक लोकोपकारी ट्रस्ट, जिसके उद्देश्य अग्र वर्णित हैं, की स्थापना हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है।

और जबकि, समस्त न्यासी यह महसूस करते हैं कि कार्बेट टाइगर रिजर्व में बाघ संरक्षण, जैव विविधता संरक्षण व ईको टूरिज्म तथा ईको विकास हेतु जन सहभागिता द्वारा कार्य करने की पहल के लिये एक सहायित संस्था के रूप में कार्बेट टाइगर कन्जरवेशन फाउण्डेशन की स्थापना आवश्यक है।

और जबकि, इस ट्रस्ट के प्रथम परिषद के न्यासी निम्न हैं:-

1. वन एवं वन्य जन्तु, पर्यावरण मंत्री, उत्तराखण्ड सरकार,
2. प्रमुख सचिव/सचिव वन एवं वन्य जन्तु, पर्यावरण उत्तराखण्ड शासन,
3. प्रमुख सचिव/सचिव, वित्त, उत्तराखण्ड शासन,
4. प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड;
5. प्रमुख वन संरक्षक (वन्य जीव)/मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक, उत्तराखण्ड,
6. निदेशक, कार्बेट टाइगर रिजर्व, उत्तराखण्ड रामनगर(नैनीताल),
7. उप निदेशक, कार्बेट टाइगर रिजर्व, उत्तराखण्ड रामनगर(नैनीताल),
8. प्रभागीय वनाधिकारी, कालागढ़ टाइगर रिजर्व वन प्रभाग,
9. उप प्रभागीय वनाधिकारी (बिजरानी)/पार्क वार्डन, उत्तराखण्ड, रामनगर(नैनीताल),





अतः अब निम्नलिखित रूप में इस न्यास का निष्पादन करते हैं:-

1. कार्बेट टाइगर कन्जरवेशन फाउण्डेशन, उत्तराखण्ड का गठन

- (एक) इस न्यास को “कार्बेट टाइगर कन्जरवेशन फाउण्डेशन, उत्तराखण्ड” के ज्ञात नाम से जाना जायेगा,  
(जिसे यहां आगे “फाउण्डेशन” के नाम से सम्बोधित किया गया है)।
- (दो) फाउण्डेशन का मुख्यालय रामनगर, जिला नैनीताल, उत्तराखण्ड में स्थित होगा।
- (तीन) फाउण्डेशन का प्रचालन क्षेत्र कार्बेट टाइगर रिजर्व और इसके आसपास का परिदृश्य, जो टाइगर रिजर्व से वन्यजीवों के इधर-उधर जाने के लिये सम्बन्धित मार्ग के साथ प्रभावी जोन बनायेगा।

2. फाउण्डेशन के लक्ष्य और उद्देश्य

- (एक) फाउण्डेशन का उद्देश्य अनुमोदित प्रबन्ध योजनाओं के अनुसार विविध स्टैकहोल्डर्स की भागीदारी के माध्यम से टाइगर और जैव विविधता के संरक्षण के लिए कार्बेट टाइगर रिजर्व प्रबन्ध को सरल बनाना और सहायता प्रदान करना तथा राष्ट्रीय और राज्य कानून के अनुरूप आसपास के भू-परिदृश्यों में समान प्रयासों में सहायता करना।
- (दो) उक्त उद्देश्यों की सहायता के लिए फाउण्डेशन के कार्य को कार्यान्वयन एजेंसी और अथवा इसके स्टाफ और अथवा प्रायोजित अथवा इसके द्वारा समर्थित अथवा अन्य संस्थानों, एजेंसियों के माध्यम से कार्यान्वयन एजेंसी द्वारा अथवा व्यक्तियों द्वारा किया जायेगा।
- (तीन) उपर्युक्त उक्त उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, फाउण्डेशन के निम्नलिखित उद्देश्य होंगे नामतः:-
- (1) कार्बेट टाइगर रिजर्व और आस-पास के भू-दृश्यों में पारिस्थितिकीय आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को सुविधाजनक बनाना;
  - (2) कार्बेट टाइगर रिजर्व और संबंधित स्थानों में प्राकृतिक पर्यावरण की सुरक्षा के लिए सहायता प्रदान करना;
  - (3) उपर्युक्त वर्णित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक समझी जाने वाली परिसम्पत्तियों के सृजन और अथवा प्रबन्ध को सरल बनाना;
  - (4) उपर्युक्त वर्णित उद्देश्यों को कानून द्वारा अनुभव विभिन्न स्रोतों से पूरा करने के लिए फाउण्डेशन के कार्यों के लिए अपेक्षित तकनीकी, वित्तीय, सामाजिक और अन्य सहायता का अनुरोध करना;
  - (5) कार्यान्वयन एजेंसी की सहायता के लिए उपर्युक्त और संबंधित क्षेत्रों में पारिपर्यटन, पारिविकास, अनुसंधान पर्यावरणीय शिक्षा, प्रशिक्षण, प्रबन्ध और परामर्शी पहलुओं को बढ़ावा देना;
  - (6) उपर्युक्त वर्णित उद्देश्यों की सहायता के लिए कुछ भी आकस्मिक अथवा आनुषंगिक।



### 3. फाउण्डेशन का शासी निकाय

- (1) कार्बेट टाइगर कन्जरवेशन फाउण्डेशन, उत्तराखण्ड को समग्र नीतिगत मार्गदर्शन और निर्देश देने के लिए कार्बेट टाइगर रिजर्व राज्य का एक शासी निकाय होगा।
- (2) कार्बेट टाइगर कन्जरवेशन फाउण्डेशन, उत्तराखण्ड के शासी निकाय में निम्नलिखित सदस्य शामिल होंगे; नामतः

(एक) वन एवं वन्य जन्तु, पर्यावरण मंत्री, उत्तराखण्ड सरकार	—	अध्यक्ष
(दो) प्रमुख सचिव/सचिव, वन एवं वन्य जन्तु, पर्यावरण, उत्तराखण्ड शासन	—	उपाध्यक्ष
(तीन) प्रमुख वन संरक्षक, उत्तराखण्ड	—	सदस्य
(चार) निदेशक, कार्बेट टाइगर रिजर्व, रामनगर	—	सदस्य
(पाँच) उप निदेशक, कार्बेट टाइगर रिजर्व, रामनगर	—	सदस्य
(छः) संबंधित क्षेत्र के दो प्रसिद्ध वैज्ञानिक अथवा फील्ड में दक्षता प्राप्त विशेषज्ञ (सरकार द्वारा नामांकित किये जाएंगे)	—	सदस्य
(सात) विधान सभा के सदस्य जो राज्य विधान सभा में संबंधित क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हों	—	सदस्य
(आठ) जिला पंचायत के प्रतिनिधि जो कि कार्बेट टाइगर रिजर्व क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहे हों	—	सदस्य
(नौ) फाउण्डेशन की कार्यकारी समिति के दो सदस्य (निदेशक/उप निदेशक, कार्बेट टाइगर रिजर्व के अलावा)	—	सदस्य
(दस) प. मुख वन संरक्षक (वन्य जीव)/मुख्य वन्य जीव प्रतिपालक, उत्तराखण्ड	—	सदस्य सचिव

- (3) उक्त बिन्दु सं०-2(सात) एवं सं०-2(आठ) में उल्लिखित विधान सभा सदस्य एवं जिला पंचायत सदस्य के अतिरिक्त शासी निकाय का कोई भी सदस्य विधान सभा, अथवा जैसा भी मामले हो, का सदस्य नहीं होगा तथा जिला पंचायत का सदस्य, शासी निकाय का सदस्य नहीं होगा।
- (4) नामित सदस्य का कार्यकाल उसके नामांकन की तिथि से तीन वर्षों की अवधि के लिए होगा।
- (5) शासी निकाय की निम्नलिखित शक्तियां होंगी और निम्नलिखित कार्य करेगा; नामतः
  - (एक) अधिनियम के उपबंधों के अनुसरण में फाउण्डेशन की नीति बनाना;
  - (दो) फाउण्डेशन के तुलनापत्र और लेखापरीक्षित लेखों पर विचार करना और अनुमोदित करना;
  - (तीन) फाउण्डेशन की वार्षिक रिपोर्ट पर विचार करना और अनुमोदित करना;

- (चार) फाउण्डेशन की कार्य योजना, निधि प्रवाह वार्षिक बजट को अनुमोदित करना;
- (पाँच) सरकार के अनुमोदन की शर्त पर ट्रस्ट के विलेख में, आवश्यक समझे गए, संशोधन करना;
- (छः) फाउण्डेशन की प्रचालन नियमावली को अनुमोदित करना;
- (सात) फाउण्डेशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न विभागों और अन्य संस्थानों तथा गैर सरकारी संगठनों के बीच समन्वय स्थापित करना;
- (आठ) फाउण्डेशन के मामलों को व्यवस्थित करने के लिए ट्रस्ट के विलेख के उपबंधों के अन्तर्गत नियम और विनियम तैयार करना;
- (नौ) फाउण्डेशन के कोष को बढ़ाने, निवेश और बजट के संबंध में सभी नीतिगत निर्णय लेना;
- (दस) फाउण्डेशन की किसी परियोजना अथवा कार्य का निलम्बन, बंद करना अथवा उस पर किसी अन्य प्रक्रिया का प्रभाव;
- (ग्यारह) ट्रस्ट के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक समझे जाने वाले ऐसे अन्य कार्यों का करना।
- (6) शासी निकाय की बैठकें निम्नलिखित तरीके से आयोजित की जायेगी; नामतः
- (एक) शासी निकाय की बैठकें वर्ष में कम से कम एक बार अवश्य की जायेगी मुख्यतः वित्तीय वर्ष के पहले महीने में;
- (दो) शासी निकाय की प्रत्येक बैठक शासी निकाय के सदस्य सचिव के हस्ताक्षर से पन्द्रह दिन के पूर्व नोटिस से लिखित रूप से बुलाई जायेगी, जिसमें उस बैठक के चर्चा के विषयों का सार होगा;
- (तीन) नोटिस देने में असावधानी के कारण हुई चूक और किसी सदस्य द्वारा नोटिस का प्राप्त न होने की अवस्था में बैठक की कार्यवाही अमान्य नहीं होगी;
- (चार) यदि शासी निकाय की बैठक में अध्यक्ष उपस्थित नहीं है तब उपाध्यक्ष बैठक की अध्यक्षता करेगा;
- (पाँच) शासी निकाय के उपस्थित एक तिहाई सदस्य शासी निकाय का कोरम बनायेंगे; परन्तु यह कि कोई कोरम किसी बैठक को स्थगित करने के लिए कोई कार्यवाहक संख्या आवश्यक नहीं होगी;
- (छः) बैठक में सभी विवादों के संबंध में मतविभाजन द्वारा निर्णय किया जाएगा;
- (सात) यदि कोई सदस्य शासी निकाय की बैठक में भाग लेने में असमर्थ है तो वह कार्यसूची पर अपने विचार लिखित में भेज सकता है, और ऐसे विचार संबंधित मामले में उनका वोट माने जाऐगे; और
- (आठ) बैठक की कार्यवाहियों के कार्यवृत्त को रिकार्ड किया जायेगा और ऐसा कार्यवृत्त सदस्य सचिव, शासी निकाय से अनुमोदित और हस्ताक्षर होने के बाद बैठक में सम्पादित कार्यक्रम का निश्चयात्मक प्रमाण होगा।

#### 4. कार्यकारी समिति

- (1) कार्बेट टाइगर कन्जर्वेशन फाउण्डेशन में इसके दैनिक प्रबन्ध को देखने के लिये कार्यकारी समिति होगी।
- (2) फाउण्डेशन के कार्यों को कार्यकारी समिति द्वारा फाउण्डेशन के नियमों की शर्त पर प्रशासित किये जायेंगे।
- (3) कार्यकारी समिति में शामिल होंगे :-

(एक) निदेशक, कार्बेट टाइगर रिजर्व, उत्तराखण्ड, नैनीताल	— अध्यक्ष
(दो) उप निदेशक कार्बेट टाइगर रिजर्व, उत्तराखण्ड, नैनीताल	— सदस्य
(तीन) कार्बेट टाइगर रिजर्व में कार्यरत पारि विकास समितियों के दो प्रतिनिधियों का शासी निकाय में नामित किया जाना	— सदस्य
(चार) कार्बेट टाइगर रिजर्व के फ्रंटलाइन स्टाफ के दो सदस्य	— सदस्य
- (4) नामांकित सदस्य का कार्यकाल उसके नामांकन की तिथि से दो वर्ष की अवधि के लिए होगा।
- (5) नामांकित सदस्यों के अतिरिक्त कार्यकारी समिति का सदस्य उस स्थिति में सदस्य नहीं रहेगा यदि वह उस कार्यालय अथवा पद पर बन्ना नहीं रहता, जिसके लिए वह समिति का सदस्य बना था।

#### 5. कार्यकारी समिति की शक्तियां एवं कार्य

कार्यकारी समिति की शक्तियां निम्नलिखित होगी और निम्नलिखित कार्य करेगी:-

- (क) फाउण्डेशन के नियम और विनियमों के अनुसार फाउण्डेशन के कार्य और निधि।
- (ख) फाउण्डेशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए तथा इसके सभी कार्यों को निष्पादित करने के लिए प्रयास करना।
- (ग) फाउण्डेशन के नियमों तथा विनियमों के अनुसार विषय विशेष के किसी व्यक्ति को लगाने तथा उसकी नियुक्ति करने की शक्ति सहित प्रशासनिक एवं वित्तीय शक्तियों का प्रयोग करना।
- (घ) फाउण्डेशन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उसके नियमों तथा विनियमों के अनुसार सार्वजनिक अथवा निजी संगठनों या व्यक्तियों के साथ समझौता करना।
- (ङ) फाउण्डेशन के नियमों तथा विनियमों और सरकार के हितों से असंगत वृत्तिदान, सहायता अनुदान, दान अथवा उपहार।



(च) फाउण्डेशन के नियमों तथा विनियमों के अनुसार राज्य या अन्यत्र कहीं और सरकार अथवा सार्वजनिक निकायों अथवा निजी संगठनों या व्यक्तियों से किसी चल अथवा अचल सम्पत्ति की फाउण्डेशन के नाम पर खरीद उपहार या अन्यथा प्राप्त करना या अधिग्रहण करना; और

(छ) शासी निकाय द्वारा सौंपे गए ऐसे अन्य कार्य करना।

## 6. कार्यकारी समिति की कार्यवाही

(क) कार्यकारी समिति की प्रत्येक बैठक अध्यक्ष द्वारा संचालित की गई जायेगी;

परन्तु यह कि अध्यक्ष की अनुपस्थिति में कार्यकारी समिति बैठक की अध्यक्षता के लिए अध्यक्ष का चयन करेगी।

(ख) कार्यकारी समिति की बैठक में उपस्थित कुल सदस्यों में से आधे कोरम का गठन करेगे;

परन्तु यह कि किसी बैठक को स्थगित करने के संबंध में कोई कोरम आवश्यक नहीं होगा।

(ग) उक्त समिति की प्रत्येक बैठक के लिए कार्यकारी समिति के प्रत्येक सदस्य को सात दिन पूर्व नोटिस दिया जाना चाहिये बशर्ते कि अध्यक्ष आपातकालीन बैठक न बुला ले यदि स्थिति की मांग हो।

(घ) नोटिस देने के असावधानी में हुई भूल अथवा किसी सदस्य को किसी बैठक का नोटिस न प्राप्त होना बैठक की कार्यवाहियों को अमान्य नहीं करेगा।

(ङ) कार्यकारी जब भी आवश्यक हो, बैठक करेगी, परन्तु प्रत्येक माह में कम से कम एक बैठक जरूर करेगी।

(च) कार्यकारी समिति बैठक में सभी विवादास्पद मामले सदस्यों के बीच मत द्वारा तय किये जायेगे।

(छ:) कोई सदस्य जो कार्यकारी समिति की बैठक में उपस्थित होने में असमर्थ हो, कार्यसूची पर अपने विचार लिखित में भेज सकता है और ऐसी विचार अभिव्यक्ति को संबंधित मामले पर उसके वोट के रूप में लिया जाएगा।

(ज) कार्यकारी समिति इसके द्वारा गठित उप समिति को किसी मामले में सलाह अथवा सिफारिश के लिए भेज सकती है तथा कार्यकारी को उप समिति द्वारा की गई सिफारिश अथवा दी गई सलाह को रद्द करने का अधिकार होगा और ऐसा करने पर कारण भी रिकार्ड करेगी।

(झ) कार्यकारी समिति की आम वार्षिक बैठक प्रतिवर्ष बुलाई जायेगी और इसमें पिछले वर्ष के लेखापरीक्षित लेखे तथा चालू वर्ष का बजट प्रस्तुत किया जाएगा और उस पर विचार विमर्शित किया जाएगा और उसे अनुमोदित किया जाएगा।

(ञ) कार्यकारी समिति की बैठक की कार्यवाही के कार्यवृत्त रिकार्ड किये जायेगे और ऐसे कार्यवृत्त सचिव के उचित अनुमोदन के बाद ही जारी किए जायेगें।



## कार्यकारी समिति का कार्यकाल और प्राधिकार

- (1) निदेशक, कार्बेट टाइगर रिजर्व फाउण्डेशन का कार्यकारी निदेशक होगा और वह कार्यकारी समिति की ओर से फाउण्डेशन के सभी प्रशासनिक और दैनिक कार्यों को निष्पादित करेंगे/करेगी तथा वह फाउण्डेशन के सभी रिकार्डों, परिसम्पत्तियों और अन्य सामग्री का संरक्षक होगा।
- (2) कार्यकारी निदेशक की फाउण्डेशन के नियमों के अनुसार निम्नलिखित शक्तियां होगी, नामतः:
  - (क) फाउण्डेशन की ओर से किसी व्यक्ति अथवा संस्थान से नगद अथवा किस्त के रूप में योगदान प्राप्त करना;
  - (ख) फाउण्डेशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के उद्देश्य से किसी चल अथवा अचल सम्पत्ति को खरीदना, प्राप्त करना अथवा पट्टे पर लेना;
  - (ग) फाउण्डेशन के सामान्य प्रशासन पर नियन्त्रण और अधिकार रखना;
  - (घ) बैंकों में खाते खुलवाना और उनका संचालन करना;
  - (ङ) फाउण्डेशन के लिए और उसकी ओर से सभी कानूनी कार्यों का अभियोजन मुकदमा चलाना, बचाव करना।
- (3) कार्यकारी निदेशक को सेमिनार, कार्यशालाओं आदि को आयोजित करने तथा फाउण्डेशन की अनुसंधान सामग्री तथा पुस्तकों के प्रकाशन को देखने का अधिकार होगा।
- (4) कार्यकारी निदेशक फाउण्डेशन द्वारा किये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों पर परियोजना प्रस्तावों को तैयार करने और सहायता के लिए विभिन्न एजेन्सियों को प्रस्तुत करने के लिए उचित कार्यवाही प्रारम्भ करेगा।
- (5) कार्यकारी निदेशक को फाउण्डेशन के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय एजेन्सियों के साथ विचार विमर्श करने का अधिकार होगा।

## सम्पत्ति, परिसम्पत्ति और देनदारियां

- (क) फाउण्डेशन की आय और सम्पत्ति से जो भी उपार्जित हो, उसका केवल उक्त निर्धारित उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिए प्रयोग किया जाना चाहिए।
- (ख) फाउण्डेशन की आय और सम्पत्ति का कोई भी हिस्सा प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से लाभांश, बोनस अथवा अन्य किसी रूप से या लाभ के माध्यम से उन व्यक्तियों को जो किसी भी समय फाउण्डेशन के सदस्य रहे हैं अथवा उनमें से कोई अथवा उनके माध्यम से दावा करने वाले व्यक्ति को प्रदत्त अथवा अन्तर्गत नहीं किया जायेगा;

परन्तु यह कि इसमें शामिल कुछ भी किसी सदस्य के पारिश्रमिक के अथवा फाउण्डेशन को दी गई, किसी सेवा के बदले में अथवा जैसा कि परिचालन नियमावली में अनुबद्ध है किसी प्रशासनिक व्यय के भुगतान को न रोके।

9. सरकार की शक्तियां

सरकार समय-समय पर फाउण्डेशन की कार्यप्रणाली की पुनरीक्षा करेगी और फाउण्डेशन के मामलों के सम्बन्ध में आवश्यक समझे जाये, ऐसे निर्देश जारी करेगी।

10. वित्तीय विनियमन

क. ट्रस्ट के कोष -

ट्रस्ट के नियम और विनियम के अनुरूप फाउण्डेशन के कार्यों को चलाने के लिए धनराशि के विभिन्न स्रोत निम्नलिखित होंगे; नामतः

- (एक) पर्यटन प्रवेश शुल्क लगाने से प्राप्त आय तथा कार्बेट टाइगर रिजर्व में दी जाने वाले सेवाओं के अन्य प्रभाव;
- (दो) राष्ट्रीय साथ ही साथ अन्तराष्ट्रीय एजेंसियों से विशिष्ट परियोजनाओं के सन्दर्भ में अन्य स्रोतों से अंशदान जैसा कि कानून में अनुमत है;
- (तीन) किसी व्यक्ति अथवा विदेशी सरकारों तथा अन्य वाह्य एजेंसियों सहित किसी व्यक्ति अथवा संगठनों से प्राप्त सहायता अनुदान, दान और सहायता जैसा कि कानून द्वारा अनुमत हो;
- (चार) ट्रस्ट के नियमों के अनुरूप कोई अन्य कार्य जो कानून द्वारा अनुमत हो।

किन्तु उपरोक्त इस शर्त के अधीन है कि कार्बेट टाइगर रिजर्व के माध्यम से राज्य सरकार को प्राप्त होने वाली आय का 20 प्रतिशत एवं अन्य स्रोतों यथा भारत सरकार/निजी संस्थाओं/दान आदि के माध्यम से प्राप्त समस्त धनराशि प्रश्नगत फाउण्डेशन के कोष में जमा की जायेगी।

ख. लेखे और लेखा परीक्षा -

- (एक) फाउण्डेशन, उचित लेखे का रख-रखाव करेगा और प्राप्ति और भुगतान, देनदारियों के विवरण आदि को शामिल करते हुए वार्षिक लेखे उस रूप में तैयार करेगा जैसा निर्धारित किया जाय;
- (दो) फाउण्डेशन के लेखे, भारत के महालेखा परीक्षक द्वारा नामिकगत तथा शासी निकाय द्वारा अनुमोदित योग्य चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट द्वारा प्रतिवर्ष लेखा परीक्षित किये जायेंगे;



(तीन) लेखा परीक्षित लेखे का इसके उद्देश्य के लिए आयोजित शासी निकाय की वार्षिक बैठक में शासी निकाय द्वारा विचार किया जायेगा और अनुमोदित किया जायेगा;

(चार) फाउण्डेशन के लेखे, भारत के नियन्त्रक और महालेखा परीक्षक के सामान्य उपबन्धों, निर्देशों के अधीन होंगे।

## 11. फाउण्डेशन का विघटन

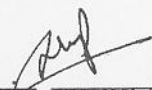
फाउण्डेशन अटल है, तथापि किसी ऐसी परिस्थिति में, जिसमें फाउण्डेशन को समाप्त अथवा विलयन करने का निर्णय लिया जाता है तो उसके सभी ऋणों और देनदारियों के पूरा हो जाने के बाद, जो कोई भी परिसम्पत्ति और सम्पत्ति और इसी तरह का कुछ भी फाउण्डेशन के सदस्यों के बीच भुगतान वितरित नहीं किया जायेगा लेकिन उस तरीके से निपटान किया जायेगा, जैसा कि राज्य सरकार द्वारा इस सम्बन्ध में निर्णित किया जाय।

## 12. विविध

(एक) जब भी मंत्रालयों, विभागों अथवा उल्लिखित संस्थान और पदनाम की नियमावली में कोई भी परिवर्तन होता है, ऐसे परिवर्तन स्वतः ही फाउण्डेशन के नियमों में शामिल हो जायेंगे।

(दो) फाउण्डेशन के किसी भी कर्मचारी द्वारा फाउण्डेशन अथवा इसकी सम्पत्ति को कोई हानि अथवा क्षति अथवा फाउण्डेशन के हितों के लिए कुछ हानिकारक करने पर फाउण्डेशन मुकदमा चला सकती है अथवा अभियोजित कर सकती है।

इस विन्यास विलय में ऊपर लिखित तारीख एवं वर्ष में इसके साक्ष्य स्वरूप निम्नवत हस्ताक्षर किये गये:-

  
(सुशांत पटनायक)  
अपर सचिव,  
वन एवं पर्यावरण